Safar Mein Nuhusat Nahin (Hindi)

सफ़र में नुहूसत नहीं

सफ़हात 15

- मालदार होने का नुस्ख़ा 04
- सफ़र का आख़िरी बुध 09
- तेरह तेज़ी कुछ नहीं 08
- अस्ल नुहूसत 10

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**सफ़र में नुहूसत नहीं**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सफ़र में नुहूसत नहीं

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 15 सफ़ह़ात का रिसाला : ''सफ़र में नुहूसत नहीं'' पढ़ या सुन ले उस की दुन्या व आख़िरत में आफ़तों और मुसीबतों से ह़िफ़ाज़त फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً'' या'नी क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा ।''[1]

नबी के आ़शिक़ों की ईद होगी ईद महशर में कोई क़दमों में होगा कोई सीने से लगा होगा
तेरे दामाने रह़मत की खुलेगी ह़श्र में वुस्अ़त वोह आ आ कर छुपेगा जो गुनहगार और बुरा होगा[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

''सफ़र'' कहने की वज्ह

इस्लामी साल का दूसरा महीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र है । लफ़्ज़ ''सफ़र'' तीन ह़ुरूफ़ का मज्मूआ़ है अ़रबी ज़बान चूंकि बहुत वसीअ़ है इस में एक लफ़्ज़ के कई कई मआ़नी होते हैं, अहले लुग़त ने सफ़र के कई मआ़नी बयान किये हैं जिन में से एक मा'ना ख़ाली होना भी है । आइये !

1...ترمذی ج2ص27حدیث484، دار الفکر بیروت

2... वसाइले बख़्शिश, स. 183, मक्तबतुल मदीना

इसी मुनासबत से माहे सफ़र को ''सफ़र'' कहने की चन्द वुजूहात मुलाहज़ा कीजिये :

(1) अहले अ़रब का मा'मूल था कि वोह माहे सफ़र शुरूअ़ होते ही जंगो जदल और सफ़र के इरादे से अपने घरों से निकल जाते जिस की वज्ह से उन के घर ख़ाली रह जाते थे, इसी वज्ह से कहा जाता है : صَفَرَ الْمَكَان (या'नी मकान ख़ाली हो गया)।[3]

(2) सफ़र कहने की एक वज्ह येह भी बयान की जाती है कि इस महीने में अहले अ़रब क़बाइल के ख़िलाफ़ चढ़ाई करते और उन्हें बे सरो सामान (Without Possessions) कर देते थे।[4]

(3) इस महीने में अहले अ़रब ''सफ़रिया'' नामी शहर में जा कर खाने पीने की चीज़ें जम्अ़ करते थे जिस की वज्ह से उन के घर ख़ाली हो जाते थे।[5]

माहे सफ़र के दीगर नाम

अहले अ़रब माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र को नाजिर और सफ़रुस्सानी भी कहा करते थे। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 911 हि.) फ़रमाते हैं : ज़मानए जाहिलिय्यत में मुहर्रम का कोई मा'रूफ़ नाम नहीं था बल्कि इसे और सफ़र दोनों को सफ़रैन कहा जाता था। अहले अ़रब रबीउ़ल अव्वल, रबीउ़स्सानी, और जुमादल ऊला, जुमादल उख़्रा की त़रह़ इन दोनों महीनों को भी सफ़रुल अव्वल और सफ़रुस्सानी कहते थे।[6] माहे सफ़र चूंकि बा बरकत महीना है इसी वज्ह से इसे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र (काम्याबी वाला) और सफ़रुल ख़ैर (भलाई वाला) भी कहा जाता है।

3...تفسیر ابن کثیر، التوبۃ، تحت الآیۃ:36 ج4ص129، دار الکتب العلمیۃ بیروت

4...لسان العرب ج1ص2204، مؤسسۃ الاعلمی بیروت

5...عمدۃ القاری ج7ص110 تحت الحدیث:1564، دار الفکر بیروت

6...المزھر فی علوم اللغۃ ج1ص300، دار الکتب العلمیۃ بیروت

दौरे जाहिलिय्यत में इस महीने के साथ सुलूक

अहले अ़रब का मा'मूल था कि वोह ज़मानए जाहिलिय्यत (The age of ignorance) में हुरमत वाले महीनों को मुक़द्दसो मोह़तरम जानने के बा वुजूद जंगो जिदाल (या'नी लड़ाई झगड़े) से बाज़ न आते और ह़ीलासाज़ी (या'नी धोकेबाज़ी) से काम लेते हुए एक महीने की हुरमत ख़त्म कर के दूसरे महीने को मोह़तरम क़रार देते, मुह़र्रम की हुरमत सफ़र की त़रफ़ हटा कर मुह़र्रम में जंग जारी रखते और मुह़र्रम के बजाए सफ़र को माहे ह़राम बना लेते और जब इस से भी तह़रीम हटाने की ह़ाजत होती तो इस में भी जंग ह़लाल कर लेते और रबीउ़ल अव्वल को माहे ह़राम क़रार देते। इस त़रह़ येह तह़रीम साल के तमाम महीनों में घूमती और इन के इस त़र्ज़े अ़मल से हुरमत वाले महीनों की तख़्सीस ही बाक़ी न रही। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमाया कि नसीअ[❁] के महीने गुज़रे हो गए, अब महीनों के अवक़ात की हुक्मे ख़ुदावन्दी के मुत़ाबिक़ ह़िफ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए।[7]

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे सफ़र भी साल के दीगर महीनों की त़रह़ एक बा बरकत महीना है लिहाज़ा इस महीने में भी गुनाहों से बचते हुए ख़ूब ख़ूब नेक आ'माल कीजिये, नफ़्ली रोज़ों का एहतिमाम कीजिये, नवाफ़िल और ज़िक्रो दुरूद की कसरत कीजिये और सफ़रुल मुज़फ़्फ़र से मुतअ़ल्लिक़ हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم से जो अवरादो वज़ाइफ़ मन्क़ूल हैं उन पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه इस की बरकत से ढेरों भलाइयां नसीब होंगी, चुनान्चे

❁ नसीअ लुग़त में वक़्त के मुअख़्ख़र करने को कहते हैं और यहां शहरे ह़राम की हुरमत का दूसरे महीने की त़रफ़ हटा देना मुराद है।

7...تفسیر خازن، التوبۃ، ج2ص237-238، مصر

पहली रात के नवाफ़िल

माहे सफ़र की पहली रात में नमाज़े इ़शा के बा'द हर मुसल्मान को चाहिये कि चार रक्अ़त नमाज़ पढ़े। पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए काफ़िरून (قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ) 15 मरतबा पढ़े और दूसरी रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए इख़्लास (قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ) 11 मरतबा पढ़े और तीसरी रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए फ़लक़ (قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ) 15 बार पढ़े और चौथी रक्अ़त में सूरए नास (قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ) 15 मरतबा पढ़े, सलाम फेरने के बा'द चन्द बार اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ पढ़े। फिर 70 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े तो **अल्लाह** पाक उस को बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाएगा और उसे हर बला से महफ़ूज़ रखेगा।[8]

रिज़्क़ में बरकत

जो कोई माहे सफ़र के आख़िरी बुध को सूरए اَلَمْ نَشْرَحْ, सूरए وَالتِّيْنِ, सूरए नस्र (اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ) और सूरए इख़्लास (قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ) अस्सी अस्सी बार पढ़े इस महीने के ख़त्म होने से पहले اِنْ شَآءَ اللّٰه वोह ग़नी हो जाएगा।[9]

जवाहिरे ख़म्सा में है : उस की उ़म्र दराज़ (Life extend) कर दी जाएगी।[10]

ह़ाजी से दुआए मग़्फ़िरत करवाइये

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : ह़ज करने वाला मग़्फ़िरत याफ़्ता है और ह़ाजी ज़ुल ह़िज्जतिल

8... राह़तुल क़ुलूब फ़ारसी, स. 61

9... लत़ाइफ़े अश्रफ़ी, 2/23, मक्तबए सिमनानी

10... जवाहिरे ख़म्सा, स. 20

ह़राम, मुहर्रमुल ह़राम, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र और रबीउ़ल अव्वल के 20 दिनों में जिस के लिये इस्तिग़फ़ार करे उस की भी मग़्फ़िरत हो जाती है ।[11]

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें इस मुबारक महीने में नफ़्ली इबादत और तिलावते क़ुरआन की कसरत के साथ साथ हिम्मत कर के तीन नफ़्ली रोज़े रखने का भी एहतिमाम करना चाहिये क्यूं कि रोज़ा रखने के बे शुमार दीनी और दुन्यवी फ़वाइद हैं । लिहाज़ा तमाम महीनों की त़रह़ माहे सफ़र में भी अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की तेरह (13), चौदह (14) और पन्दरह (15)) तारीख़ों के रोज़े रखने की कोशिश करें क्यूं कि सफ़र हो या ह़ज़र (या'नी ह़ालते इक़ामत) हमेशा नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर महीने इन तीन दिनों के रोज़े न सिर्फ़ ख़ुद रखते बल्कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم को भी इस की तरग़ीब दिलाते थे । आइये ! हर माह तीन दिन रोज़े रखने की फ़ज़ीलत पर तीन अह़ादीसे मुबारका पढ़िये और अ़मल का जज़्बा बेदार कीजिये, चुनान्चे

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जिस त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल (Shield) होती है इसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और हर माह तीन दिन रोज़े रखना बेहतरीन रोज़े हैं ।[12]

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर महीने में तीन दीन या'नी तेरहवीं चौदहवीं

11...احیاء العلوم ج1ص323، دار صادر بیروت

12...ابن خزیمہ ج3ص301حدیث2125، المکتب الاسلامیہ بیروت

और पन्दरहवीं तारीख़ के रोजे़ सारी ज़िन्दगी के रोज़ों के बराबर हैं ।[13]

(3) नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रमज़ान के रोजे़ और हर महीने में तीन दिन के रोजे़ सीने की ख़राबी को दूर करते हैं ।[14]

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र से मुतअ़ल्लिक़ बे बुन्याद बातें

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र जैसे बा बरकत महीने से मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी बे बुन्याद बातें मश्हूर हैं । ज़मानए जाहिलिय्यत में अहले अ़रब मह्ज़ अपने बाति़ल ख़यालात की वज्ह से इसे मन्हूस ख़याल करते थे । जैसा कि अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 855 हि.) फ़रमाते हैं : दौरे जाहिलिय्यत में (या'नी इस्लाम से पहले) माहे सफ़र के बारे में लोग इस क़िस्म के वहमी ख़यालात (Sceptical thoughts) भी रखा करते कि इस महीने में मुसीबतें और आफ़तें बहुत होती हैं, इसी वज्ह से वोह लोग माहे सफ़र के आने को मन्हूस (Ominous) ख़याल किया करते थे ।[15] नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के बारे में उन के वहमी ख़यालात को बाति़ल क़रार देते हुए फ़रमाया : ''لَا صَفَرَ'' या'नी **सफ़र कुछ नहीं** ।[16]

मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 1052 हि.) इस ह़दीस की शर्ह़ में लिखते हैं : अ़वाम इसे (या'नी सफ़र के महीने को) बलाओं, ह़ादिसों और आफ़तों के नाज़िल होने का वक़्त क़रार देते हैं, येह अ़क़ीदा बाति़ल है इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं है ।[17]

13...نسائی ص396 حدیث2417، دار الکتب العلمیۃ بیروت

14...مسند امام احمد ج9 ص36 حدیث23132، دار الفکر بیروت

15...عمدۃ القاری ج7 ص110 تحت الحدیث1564 مفہوماً

16...بخاری ج4 ص24 حدیث5707، دار الکتب العلمیۃ بیروت

17...اشعۃ اللمعات ج3 ص664

माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र और हमारा मुआ़शरा

इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में भी माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र में नुहूसत से मुतअ़ल्लिक़ लोगों के ग़लत़ नज़रिय्यात ख़त्म नहीं हुए बल्कि जैसे ही इस बा बरकत महीने की आमद होती है तो नुहूसत के वहमी तसव्वुरात के शिकार बा'ज़ नादानों की जानिब से इस पाकीज़ा महीने से मुतअ़ल्लिक़ त़रह़ त़रह़ की ग़लत़ फ़हमियों पर मुश्तमिल पैग़ामात फैलाए जाते हैं और इस माह को इन्तिहाई मन्हूस तसव्वुर किया जाता है कि ❖ इस महीने में नया कारोबार शुरूअ़ नहीं करना चाहिये नुक़्सान का ख़त़रा है, ❖ सफ़र करने से बचना चाहिये एक्सीडन्ट का अन्देशा है, ❖ शादियां न करें, बच्चियों की रुख़्सती न करें कि इस से घर बरबाद होने का इम्कान है, ❖ ऐसे लोग बड़ा कारोबारी लेनदेन नहीं करते, ❖ घर से बाहर आमदो रफ़्त में कमी कर देते हैं इस गुमान के साथ कि आफ़ात नाज़िल हो रही हैं, ❖ अपने घर के एक एक बरतन को और सामान को ख़ूब झाड़ते हैं, ❖ इसी त़रह़ अगर किसी के घर में इस माह में मय्यित हो जाए तो इसे मन्हूस समझते हैं ❖ और अगर उस घराने में अपने लड़के या लड़की की निस्बत तै़ हुई हो तो उस को तोड़ देते हैं।

सफ़र को मन्हूस समझना जहालत है

सदरुश्शरीअ़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : माहे सफ़र को लोग मन्हूस जानते हैं इस में शादी बियाह नहीं करते लड़कियों को रुख़्सत नहीं करते और भी इस क़िस्म के काम करने से परहेज़ करते हैं और सफ़र करने से गुरेज़ करते हैं, ख़ुसूसन माहे सफ़र की इब्तिदाई तेरह तारीख़ें बहुत ज़ियादा नह़ूस (या'नी नुहूसत वाली) मानी जाती हैं और इन को तेरह तेज़ी कहते हैं येह सब जहालत की बातें हैं।[18]

18... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, जि. 3, स. 659, मक्तबतुल मदीना

याद रखिये ! इस क़िस्म के नज़रिय्यात सरासर शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं, हमें इन से तौबा करनी चाहिये। इस्लाम में हरगिज़ हरगिज़ न कोई महीना, न दिन और न कोई तारीख़ मन्हूस है बल्कि हर महीना, दिन, तारीख़ **अल्लाह** पाक के पैदा किये हुए हैं और उस ने इन में से किसी को नुहूसत वाला नहीं बनाया। हमें ख़ुद भी इन वहमी ख़यालात से बचना चाहिये और अगर किसी को इन बातों में मुब्तला पाएं तो उस की इस्लाह़ के लिये कोशिश भी करनी चाहिये।

करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे

शुऊ़रो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़ता या रब (19)

"तेरह तेज़ी" की शरई ह़क़ीक़त

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के पूरे महीने से मुतअ़ल्लिक़ नुहूसत का तसव्वुर तो आ़म ही है बिल ख़ुसूस इस की इब्तिदाई तेरह तारीख़ों और इस महीने के आख़िरी बुध के बारे में भी बहुत सी ख़िलाफ़े शरीअ़त बातें मश्हूर हैं मसलन इब्तिदाई तारीख़ों में घुंग्नियां (चने या गन्दुम) उबाल कर नियाज़ (Conveying of reward) दिलाई जाती है। मख़्सूस ता'दाद में सूरए मुज़्ज़म्मिल का ख़त्म करवाया जाता है। साह़िले समुन्दर पर आटे की गोलियां बना कर मछलियों को डाली जाती हैं। इन सब बातों के पीछे लोगों का येह ज़ेह्न बना होता है कि माहे सफ़र में जो आफ़ातो बलिय्यात नाज़िल होती हैं इन कामों को करने से येह बलाएं टल जाती हैं। याद रहे मुसीबतें व आज़्माइशें **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से आती हैं और इन के लिये कोई दिन या महीना मख़्सूस नहीं बल्कि जिस के ह़क़ में जो आज़्माइश लिखी जा चुकी है वोह उसे पहुंच कर रहती है अब चाहे सफ़र का महीना हो या साल के दीगर महीने नीज़ येह बात भी ज़ेह्न नशीन रहे कि क़ुरआन ख़्वानी या नियाज़ फ़ातिह़ा करना एक मुस्तह़ब काम है और

19... वसाइले बख़्शिश, स. 78

हर त़रह़ के रिज़्क़े ह़लाल पर हर माह की किसी भी तारीख़ को किसी भी वक़्त दिलवाई जा सकती है लेकिन महूज़ वह्म की बिना पर येह समझ लेना कि अगर तेरह तेज़ी की फ़ातिह़ा न दिलाई गई और चने उबाल कर तक़्सीम न किये गए तो घर के कमाने वाले अफ़राद का रोज़गार मुतअस्सिर होगा या घर वाले किसी मुसीबत का शिकार हो जाएंगे येह नज़रिय्या महूज़ बे बुन्याद है।

सफ़र का आख़िरी बुध और नुहूसत

इब्तिदाई तेरह तारीख़ों के इलावा माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के आख़िरी बुध के बारे में भी बहुत सी ग़लत़ बातें मश्हूर हैं जैसा कि **बहारे शरीअ़त** में है कि माहे सफ़र का आख़िरी चहार शम्बा (या'नी बुध का दिन) हिन्दुस्तान में बहुत मनाया जाता है, लोग अपने कारोबार बन्द कर देते हैं, सैरो तफ़रीह़ व शिकार को जाते हैं, पूरियां (Puris) पकती हैं और नहाते धोते ख़ुशियां मनाते हैं और कहते येह हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस रोज़ ग़ुस्ले सिह़्ह़त फ़रमाया था और बैरूने मदीनए त़य्यिबा सैर के लिये तशरीफ़ ले गए थे। येह सब बातें बे अस्ल हैं, बल्कि इन दिनों में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मरज़ शिद्दत के साथ था, वोह बातें ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ (झूटी) हैं और बा'ज़ लोग येह कहते हैं कि इस रोज़ बलाएं आती हैं और त़रह़ त़रह़ की बातें बयान की जाती हैं सब बे सुबूत हैं।[20]

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने माहे सफ़र के आख़िरी बुध के बारे में सुवाल का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाया : चहार शम्बा (या'नी बुध का दिन मनाना) महूज़ बे अस्ल। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم[21]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते

20... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, जि. 3, स. 659

21... फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 240, रज़ा फ़ाउन्डेशन

हैं : बा'ज़ लोग सफ़र के आख़िरी चहार शम्बे को ख़ुशियां मनाते हैं कि मन्हूस शह्र (या'नी नुहूसत वाला महीना) चल दिया येह भी बातिल है।[22]

माहे सफ़र और इस्लामी ता'लीमात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात को पढ़ कर सफ़रुल मुज़फ़्फ़र को मन्हूस समझने का वह्म दिल से निकल जाना चाहिये अगर हमारे दिलो दिमाग़ में कभी इस त़रह़ के वस्वसे आएं तो उन की त़रफ़ तवज्जोह न दें बल्कि इस्लामी ता'लीमात पर अ़मल करें।

रूहुल बयान में है : सफ़र वग़ैरा किसी महीने या मख़्सूस वक़्त को मन्हूस समझना दुरुस्त नहीं, तमाम अवक़ात **अल्लाह** पाक के बनाए हुए हैं और इन में इन्सानों के आ'माल वाक़ेअ़ होते हैं। जिस वक़्त में बन्दए मोमिन **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो बन्दगी में मश्ग़ूल हो वोह वक़्त मुबारक है और जिस वक़्त में **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी करे वोह वक़्त उस के लिये मन्हूस है। **दर ह़क़ीक़त अस्ल नुहूसत तो गुनाहों में है।**[23]

अस्ल नुहूसत गुनाह है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र से मुतअ़ल्लिक़ अ़वाम में फैली हुई ग़लत़ फ़हमियों का ह़क़ीक़त से दूर दूर तक कोई तअ़ल्लुक़ नहीं बल्कि येह महज़ वहमी ख़यालात और इल्मे दीन से दूरी का नतीजा है। दर ह़क़ीक़त नुहूसत तो गुनाहों में है अब चाहे वोह सफ़र के महीने में किये जाएं या साल के किसी भी महीने में इन का इरतिकाब किया जाए, क्यूं कि नुहूसत को किसी ख़ास ज़माने जैसे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र वग़ैरा के साथ ख़ास समझना तो बिल्कुल ग़लत़ है, सब ज़माना **अल्लाह** पाक का पैदा कर्दा है, इसी में आदमियों के अफ़्आ़ल होते हैं, चुनान्चे जिस ज़माने को बन्दए मोमिन **अल्लाह** पाक की फ़रमां

22... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 257, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़

23... تفسیر روح البیان، التوبۃ ج3ص428، دار احیاء التراث العربی بیروت

बरदारी में लगाए वोह ज़माना उस के लिये बरकत वाला है और जिस ज़माने को बन्दा **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी में गुज़ारे वोह उस के लिये नुहूसत का ज़माना है। नुहूसत दर अस्ल **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी में है।[24]

हाए ! ना फ़रमानियां बदकारियां बे बाकियां *आह ! नामे में गुनाहों की बड़ी भरमार है*
बन्दए बदकार हूं बेहद ज़लीलो ख़्वार हूं *मग़्फ़िरत फ़रमा इलाही ! तू बड़ा ग़फ़्फ़ार है*[25]

सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ वहमी ख़यालात को कैसे दूर करें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वहम और बद शुगूनी दोनों ही बेहद मोहलिक अमराज़ हैं मगर ऐसा भी नहीं कि इन से पीछा छुड़ाना दुश्वार हो, अगर हम **अल्लाह** पाक की ज़ात और उस की रहमत पर भरोसा रखें और बद शुगूनी के अस्बाब पर ग़ौर करते हुए इलाज शुरूअ़ कर दें तो इस मरज़ से छुटकारा मिल सकता है, आइये ! इस बारे में कुछ अस्बाब और उन के इलाज मुलाहज़ा कीजिये और इन पर अ़मल की भी कोशिश कीजिये चुनान्चे

(1) बद शुगूनी का पहला सबब इस्लामी अ़क़ाइद से ला इल्मी है। इस का इलाज येह है कि **अल्लाह** पाक की लिखी हुई तक़्दीर पर ए'तिक़ाद रखते हुए येह ज़ेह्न बना लीजिये कि हर भलाई, बुराई **अल्लाह** पाक ने अपने इल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है, जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था, अपने इल्म से जाना और वोही लिख दिया। अब अगर माहे सफ़र या किसी भी दिन या महीने में कोई मुसीबत आएगी तो हमारा पहले से ज़ेह्न बना होगा कि येह मुसीबतो परेशानी मेरी तक़्दीर में लिखी हुई थी न कि किसी चीज़ की नुहूसत की वज्ह से ऐसा हुवा है।

(2) बद शुगूनी (bad-omen) का दूसरा सबब तवक्कुल या'नी

24...لطائف المعارف ص83، المكتبة العصرية بيروت

25... वसाइले बख़्शिश, स. 478, 479

अल्लाह पाक की ज़ात पर कामिल भरोसा न होना भी है। इस का इ़लाज येह है कि जब दिल में किसी चीज़ के बारे में कोई वह्म पैदा हो तो रब्बे करीम पर तवक्कुल कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه येह ख़याल दिल से जाता रहेगा।

(3) बद शुगूनी का तीसरा सबब इस की हलाकत खे़ज़ियों और नुक़्सानात से बे ख़बरी है कि बन्दा जब किसी चीज़ के नुक़्सान से ही बा ख़बर नहीं है तो उस से बचेगा कैसे ? इस का इ़लाज येह है कि अह़ादीसे मुबारका और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन की रोशनी में बद शुगूनी की हलाकत खे़ज़ियों और नुक़्सानात का मुत़ालआ़ कीजिये और उन पर ग़ौर करते हुए उन से बचने की कोशिश भी कीजिये।

(4) बद शुगूनी का चौथा सबब नेक शुगून इख़्तियार न करना या नेक शुगून इख़्तियार करने में तवज्जोह न देना और इस की बुन्यादी मा'लूमात का न होना भी है। बुरे शुगून पर अ़मल करने से चूंकि शरीअ़त मन्अ़ फ़रमाती है और नेक शुगून लेना शर्अ़न मुस्तह़ब है। तो बुरे शुगून से बचने के लिये नेक शुगून लेने की आ़दत बनाई जाए।

बद शुगूनी दूर करने का एक त़रीक़ा ज़िक्रो अज़्कार और वज़ाइफ़ की कसरत भी है। इस का इ़लाज बताते हुए आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : इस क़िस्म (या'नी बद शुगूनी वग़ैरा) के ख़त़रे वस्वसे जब कभी पैदा हों उन के वासिते क़ुरआने करीम व ह़दीस शरीफ़ से चन्द मुख़्तसर व बे शुमार नाफ़ेअ़ (फ़ाएदा देने वाली) दुआ़एं लिखता हूं उन्हें एक एक बार ख़्वाह ज़ाइद (या'नी एक से ज़ियादा मरतबा) आप और आप के घर वाले पढ़ लें। अगर दिल पुख़्ता हो जाए और वोह वह्म जाता रहे तो बेहतर वरना जब वोह वस्वसा पैदा हो एक एक दफ़्आ़ पढ़ लीजिये और यक़ीन कीजिये कि **अल्लाह** व रसूल के वा'दे सच्चे हैं और शैत़ान मल्ऊ़न का डराना झूटा। चन्द बार में बि औ़निही तआ़ला (या'नी **अल्लाह** पाक की मदद से) वोह वह्म बिल्कुल ज़ाइल (या'नी ख़त्म) हो जाएगा और अस्लन

(बिल्कुल) कभी किसी त़रह़ उस से कोई नुक़्सान न पहुंचेगा। वोह दुआ़एं येह हैं :

(1) حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ (तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हम को बस है और क्या अच्छा कारसाज़। (پ4،آل عمرٰن:173))

(2) اَللّٰھُمَّ لَا طَیْرَ اِلَّا طَیْرُكَ وَلَا خَیْرَ اِلَّا خَیْرُكَ وَلَا اِلٰهَ غَیْرُكَ (या'नी ऐ **अल्लाह**! तेरी फ़ाल फ़ाल है और तेरी ही ख़ैर ख़ैर है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।)(26)

किताब "बद शुगूनी" का तआ़रुफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बद शुगूनी के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने और इस मूज़ी मरज़ से छुटकारा पाने के लिये मक्तबतुल मदीना की 126 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बद शुगूनी**" का मुत़ालआ़ कीजिये। **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो ज़हे नसीब! ज़ियादा ता'दाद में ह़ासिल फ़रमा कर तक़्सीम भी कीजिये। दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislamihind.net से इस किताब को पढ़ा भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सफ़र के महीने में पेश आने वाले चन्द तारीख़ी वाक़िआ़त

☆ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र दूसरी हिजरी में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه और ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की शादी ख़ाना आबादी हुई। (الکامل فی التاریخ ج٢ص١٢، دار الکتب العلمیة بیروت)

☆ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सात हिजरी में मुसल्मानों को फ़त्हे ख़ैबर नसीब

26... फ़तावा रज़विय्या, 29/645 मुख़्तसरन

हुई । (البداية والنهاية ج٣ص٣٩٢، دار الفكر بيروت) ☆ सैफ़ुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा अ़बदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم ने सफ़रुल मुज़फ़्फ़र आठ हिजरी में बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल किया । (الكامل في التاريخ ج٢ص١٠٩) ☆ मदाइन (जिस में किस्रा का महल था) की फ़त्ह़ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सोलह हिजरी ही के महीने में हुई । (الكامل في التاريخ ج٢ص٣٥٧)

क्या अब भी आप सफ़र को मन्हूस जानेंगे ? हरगिज़ नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

उम्मे अ़त्त़ार

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अम्मीजान एक नेक और परहेज़ गार ख़ातून थीं । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बड़े भाई की वफ़ात के थोड़े ही अ़र्से बा'द 17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1398 हि. में आप की प्यारी प्यारी अम्मीजान इन्तिक़ाल फ़रमा गईं । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि अम्मीजान का शबे जुमुआ़ इन्तिक़ाल हुवा । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कलिमए त़य्यिबा और इस्तिग़फ़ार पढ़ने के बा'द ज़बान बन्द हुई । ग़ुस्ल देने के बा'द चेहरा निहायत रोशन हो गया था । ज़मीन के जिस ह़िस्से पर रूह़ क़ब्ज़ हुई, वहां कई रोज़ तक ख़ुश्बू आती रही और ख़ुसूसन रात के उस ह़िस्से में जिस में इन्तिक़ाल हुवा था, त़रह़ त़रह़ की ख़ुश्बूओं की लपटें आतीं । मैं ने तीजे वाले दिन सुब्ह़ के वक़्त चन्द गुलाब के फूल ला कर अपने हाथ से अम्मीजान की क़ब्र पर चढ़ाए जो शाम तक तक़रीबन तरो ताज़ा रहे । यक़ीन जानिये ! उन में ऐसी अ़जीब भीनी भीनी ख़ुश्बू थी कि मैं ने कभी गुलाब के फूलों में ऐसी ख़ुश्बू नहीं सूंघी थी न अब तक सूंघी है बल्कि घन्टों तक वोह ख़ुश्बू मेरे हाथों से भी आती रही ।

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं कि येह सब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी का सदक़ा है, जिस पर भी सरकारे

मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी और महकी महकी नज़रे करम हो जाती है, वोह ज़ाहिरी व बातिनी ख़ुश्बूओं से महक्ने लगता है और फिर उस की ख़ुश्बू से एक आ़लम महक उठता है।

चाहे ख़ुदा तो पाएंगे इ़श्क़े नबी में ख़ुल्द निकली है नामए दिले पुर ख़ूं में फ़ाले गुल

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अम्मीजान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا पर **अल्लाह** करीम का कितना करम है कि उन की वफ़ात कलिमए त़य्यिबा और इस्तिग़फ़ार पढ़ने के बा'द हुई। **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "जिस का आख़िर कलाम لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (या'नी कलिमए त़य्यिबा) हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (ابو داؤد ج۳ ص۲۵۵ حدیث۳۱۱۶، دار احیاء التراث العربی بیروت)

उन की तुरबत पे बारिश हो अन्वार की मौला रुत्बा बढ़ा उम्मे अ़त्तार का
तेरा घर ख़िदमते दीं का मर्कज़ बना हम पे एह़सान है तेरे अ़त्तार का

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र और हमारा मुआ़शरा	7
"सफ़र" कहने की वज्ह	1	सफ़र को मन्हूस समझना जहालत है	7
माहे सफ़र के दीगर नाम	2	"तेरह तेज़ी" की शरई ह़क़ीक़त	8
दौरे जाहिलिय्यत में इस महीने के साथ सुलूक	3	सफ़र का आख़िरी बुध और नुहूसत	9
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र कैसे गुज़ारें ?	3	माहे सफ़र और इस्लामी ता'लीमात	10
पहली रात के नवाफ़िल	4	अस्ल नुहूसत गुनाह है	10
रिज़्क़ में बरकत	4	सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ वह्मी ख़यालात को कैसे दूर करें ?	11
ह़ाजी से दुआए मग़्फ़िरत करवाइये	4		
अय्यामे बीज़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल	5	किताब "बद शुगूनी" का तआ़रुफ़	13
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र से मुतअ़ल्लिक़ बे बुन्याद बातें	6	चन्द तारीख़ी वाक़िआ़त	13
		उम्मे अ़त्तार	14

أَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सफ़र कुछ नहीं

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के बारे में वहमी ख़यालात को ग़लत क़रार देते हुए फ़रमाया : ‘ لَا صَفَرَ ’’ सफ़र कुछ नहीं ।

(بخاری، کتاب الطب، باب الجذام، ۴/۲۳، حدیث: ۵۷۰۷)

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رحمۃ اللہ علیہ इस ह़दीस की शर्ह़ में लिखते हैं : अ़वाम इसे (या'नी सफ़र के महीने को) बलाओं, ह़ादिसों और आफ़तों के नाज़िल होने का वक़्त क़रार देते हैं, येह अ़क़ीदा बात़िल है इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं है।

(اشعۃ اللمعات(فارسی)، ۳/۶۶۴)

गुनाहों की नुहूसत बढ़ रही है दम ब दम मौला
मैं तौबा पर नहीं रह पा रहा साबित क़दम मौला
(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net